

भारत का प्राचीन
श्री गुरुदेव

H-2

ॐ नमः शीतलाय ॥ ॥ शीतला वप्रदाय न रुकानां च युजाय न दाना
दवसोरुचं गुरुः श्रेय वदस्व नमः ॥ १ ॥ ॥ सुगुणवाच ॥ शीतला सूर्यक
लूच नक्षत्रं स्वप्रवादिनी दीर्घदंष्ट्रे विनूयाक्षी शीतला त्वं यमीदृश ॥ २ ॥
धनात्मजनदायक योजाये वरुया कृपा नया रुद्रा जगद्धात्री शीतला वप्रदा
सदा ॥ ३ ॥ रुद्रिडा न लुले श्रुते व्युत्पत्तिस्त्वा विधानमस्य वालानां शान्तिकर्त्री

व शीतल दविचलिक ॥ ४ ॥ वालानां प्रकृता धीय नवनामस्मप्रनिथ
वालानां शान्तिकर्त्री च शीतल वप्रदा रुव ॥ ५ ॥ प्रकृवर्द्धना चैव कृव
दा रुद्रिमाक्षी शीतल वप्रदं नक्षत्रं नवनामस्मप्रनिथ ॥ ६ ॥ दृग्जन्तुपासि
न विस्वसर्वेषां शान्तिका विधी स्मप्रनिथ दिवा रात्री आराग्ययष्टि वद्विनी ॥ ७ ॥
नमः शीतल दवि शीतल कूचूवा रे लीला सुवन्दिनं दवि शीतल व

नदासदा ॥ ८ ॥ स्नातं च वयं ० अमुं नम्यन्नागं रुच्यं कृतं ॥ सुवर्णवर्णमात्रं तं
सर्वदुःखं निवारयन् ॥ ९ ॥ यंचां नम्यन् वरं कुर्यात् ॥ नम्यन्तु सदा सदा वदितुं ॥ नम्यन्
वालस्य सोऽयं ॥ क्रियं सत्यमविष्कृतं ॥ १० ॥ शीतलं यस्मिन् नित्यं ॥ सुव
नित्यं अदन्ति न ॥ धनं दायकं दायकं न ॥ योऽस्मात् ४ युसीदसि ॥ ११ ॥ सुवनिदं
वना ४ सर्वं ॥ मूनया दानं वास्तु ॥ नया ॥ देववना दत्ता ॥ सुखात्वं दं विशीतलं

॥ १२ ॥ नवदं नमोऽस्तु ॥ अमिषं नववर्जं यन् ॥ यन् यन् मलस्रानं
कदाचिन्नेवकायं यन् ॥ १३ ॥ अन्यद्वान् यन् यन् ॥ ओषधं नैवकायं
यन् ॥ यन् दामादि वरं कृतं ॥ नामावास्तु समोचनं ॥ १४ ॥ चत्रं तदकं
सदेवि ॥ नवीनं याति यि ॥ यन् ॥ नम्यन् वालस्य दं देव ॥ सोऽयं रुच्यं नित्यं
लुप्तं ॥ १५ ॥ गदा ॥ अकिनीतीच ॥ त्वत्पसा दारुयं नदि ॥ यस्य रु

द्वादशवित्तं किदं सस्य संमूखाः ॥ १७ ॥ वन्दनात्मनः सस्य संमूखाः
 लं न नमानमः ॥ अस्मन्नि चत्वा मा नः ॥ गीतला गीतल निच ॥ १८ ॥ न
 ज्वाय य ॥ ० अमु ॥ गीतला नस्य रुष्य नि ॥ विवि शिद नि नू दं य ॥ सस्य
 नत्वा सद्येव हि ॥ १८ ॥ नस्य स्याव न दला ॥ यूना नू दं ल राधिनी ॥ वा
 दस्य मूखा चैव ॥ य ॥ गीतल नि च वालक ॥ १९ ॥ सायि मूका रु व ची द्य

वालकाना रु सं गय ॥ गीतला मरु ला चैव ॥ नू ल की गु ल की न था ॥ २० ॥ म द
 ला वन्द ला चैव ॥ य ॥ म न न मान मः ॥ दं सा रु य ॥ ० अमु ॥ गु ला यू जा वि
 धान क ॥ २१ ॥ सर्व सिद्धि कृ व रु स्य ॥ अ वि हि ॥ ये व रा धिनी ॥ गीतल कृ व च वाला
 ना ॥ गीतला या ॥ यु सा द न ॥ २२ ॥ की व र ख गु अ रु अ य ॥ वा स ल ॥ ये व न
 यथ न ॥ य ॥ अ वा च रु ॥ ये व ॥ जी ना द्यु क म थ यि वा ॥ २३ ॥ वि य रु अ य

दा न वं गीत ला यी निका श्रु या ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ति श्री व द्वा लु यू ना र म वि था
 र्क गीत ला ला र्क समा र्क ॥ ॥ ॥ नि ह्यं द ग्ग व र्क न ग्ग ना व र्क न वा ला
 य या ० वा सि धि ४ ॥ न्या स आ च म्य ॥ या ० व सा न स मा ऊ न्ये (ग द क ल ग)
 द क न ना गि न म हि वि ॐ थ न ॥ ॐ श्री ४ ग्ग नि व द न ॥ द ग्ग यं च क र्क वा ॥ ॥
 स र्ज न रा लु अ र्क आ दि ॥ ध क्कू श्री गी त्री र्क न व ध स र्क वि था या र्क ॥ ॥

ॐ श्री गीत ला र्क नमः स्वाहा ॥

H-2

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार